Socialism

समाजवाद

- परिचय
- अर्थ
- परिभाषा
- सिद्धान्त / विशेषताएँ
- विशेषताएँ, गुण, दोष
- विभिन्न रूप तथा आलोचना

सहायक आचार्य: [illegible]
विभाग: राजनीति विज्ञान
भाग दो ... पेपर
[illegible]
पेपर - 1
दिनांक: २४/०३/२०२०

प्रस्तावना: समाजवाद एक अत्यंत व्यापक तथा अनेक अर्थ वाली विचारधारा है। यह आज के युग की सर्वाधिक लोकप्रिय विचारधारा है और समाजवाद की व्यापक लोकप्रियता के कारण ही जोड ने कहा है 'समाजवाद एक टोपी की तरह है जिसकी आकृति नष्ट हो गई है, क्योंकि प्रत्येक ने इसका प्रयोग किया है।' समाजवाद राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था का विकास एवं सामाजिक न्याय की स्थापना और व्यक्तियों को आर्थिक समानता दिलाना समाजवाद का उद्देश्य है।

अर्थ: समाजवाद अंग्रेजी भाषा के 'Socialism' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Socialism शब्द की उत्पत्ति 'Socius' शब्द से हुआ जिसका अर्थ साथी होता है। अतः समाजवाद शब्द का संबंध समाज और उसके सदस्यों से है। समाजवाद मुख्यतः समाज से संबंधित है और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। समाजवाद शब्द मुख्य रूप से तीन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है: जैसे —

(i) यह एक राजनीतिक सिद्धान्त है।
(ii) यह एक राजनीतिक आंदोलन है।
(iii) इसका प्रयोग एक विशेष वर्ग की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था के लिए किया जाता है।

समाजवाद की परिभाषा:

बर्नार्ड शॉ के अनुसार, "समाजवाद का अभिप्राय सम्पत्ति के सभी आधारभूत साधनों पर नियंत्रण से है। यह नियंत्रण समाजवाद के किसी एक वर्ग द्वारा न होकर स्वयं समाज के द्वारा होगा और धीरे-धीरे व्यवस्थित लोकतांत्रिक ढंग से स्थापित किया जायेगा।"

सेलर्स के अनुसार, "समाजवाद एक ऐसी प्रजातांत्रिक विचारधारा है जिसका उद्देश्य समाज में एक ऐसी आर्थिक

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

'व्यवस्था लाना है जो किसी भी सम्पन्न व्यक्ति को अधिकतम संभव न्याय और स्वाधीनता प्रदान कर सके।"

अशोक मेहता की इसमें भी भारत के समाजवादी एवं साम्यवादियों के जनक जयप्रकाश नारायण की परिभाषा सबसे अधिक सुन्दर है। उनके शब्दों में, 'समाजवादी समाज एक ऐसा वर्गहीन समाज होगा, जिसमें सब श्रमजीवी होंगे। उस समाज में मनुष्य के श्रम का शोषण नहीं होगा। इस समाज की सारी सम्पत्ति सच्चे अर्थों में सार्वजनिक सम्पत्ति होगी तथा अनार्जित आय समाप्त हो जाएगी। ऐसे समाज में मानव जीवन की प्रगति होगी और सबको उसके हित के लिए जीएगें।'

समाजवाद का सिद्धान्त या विशेषताएं :

(1) **व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व :** समाजवाद व्यक्तिवाद के विपरीत सिद्धान्त है जो व्यक्ति की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देता है। यह विचारधारा की मान्यता है कि समाज के माध्यम से ही व्यक्ति सम्पूर्ण विकास कर सकता है।

(2) **पूंजीवाद का विरोधी :** समाजवाद पूंजीवाद का विरोधी है। समाजवाद के अनुसार समाज में असमानता तथा अन्याय के कारण पूंजीवाद की विद्यमानता है। पूंजीवाद में उत्पादन के साधन नियंत्रण न होने के कारण संपत्ति पर पूंजीवाद का अधिकार होता है। समाजवादियों के विचार में पूंजीपति व श्रमिकों में संघर्ष अनिवार्य है। अतः समाजवाद उत्पादन व वितरण के साधनों को पूंजीपति के हाथों से समाज को सौंपना चाहता है।

(3) **सहयोग पर आधारित :** समाजवाद प्रतियोगिता का विरोध करता है और सहयोग के वृद्धि की पर बल देता है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ~~[illegible]~~ स्तर पर सहयोग करके अनावश्यक प्रतिस्पर्धा को समाप्त किया जा सकता है।

(4) **आर्थिक समानता पर आधारित :** समाजवाद सभी व्यक्तियों के लिए आर्थिक समानता प्रदान करने का पक्षपाती है। समाजवादी विचारकों का मत है कि आर्थिक असमानता अधिकांश दोषों का मूल आधार है।

Scanned with CamScanner

(5) **उत्पादन तथा वितरण के साधनों पर राज्य का नियंत्रण:**

समाजवादी विचारकों का मत है कि सम्पूर्ण देश की सम्पत्ति पर किसी व्यक्ति विशेष का नियंत्रण न होकर सम्पूर्ण समाज का नियंत्रण होना चाहिए। उत्पादन तथा वितरण के साधन यदि पर यदि राज्य का नियंत्रण रहेगा तो सभी व्यक्तियों की आवश्यकताएं पूरी नहीं होंगी।

(6) **लोकतंत्रीय शासन में आस्था:**

समाजवादी विचारक राज्य के लोकतंत्रीय स्वरूप में विश्वास रखते हैं। वे मताधिकार का विस्तार करके श्रमिक को उसकी व्यवस्था चलाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन मानते हैं। इस व्यवस्था से व्यक्तियों को राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति होती है।

समाजवाद के पक्ष में तर्क या गुण

(1) **शोषण का अन्त:** समाजवाद श्रमिकों एवं निर्धनों के शोषण का विरोध करता है। समाजवादियों ने स्पष्ट कर दिया है कि पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजीपतियों के षड्यन्त्रों के द्वारा ही निर्धनों एवं श्रमिकों का शोषण होता है। यह विचारधारा शोषण के अन्त में आस्था रखती है। इसलिए विश्व के श्रमिक भाग्यवश इसका समर्थन करते हैं।

(2) **सामाजिक न्याय पर आधारित:** समाजवादी व्यवस्था में किसी वर्ग विशेष के हितों को महत्व न देकर समाज के सभी व्यक्तियों के हितों को महत्व दिया जाता है। यह व्यवस्था पूंजीपतियों के अन्याय को समाप्त करके एक ऐसे वर्गविहीन समाज की स्थापना करने का समर्थन करती है जिसमें विषमता न्यूनतम हो।

(3) **उत्पादन का लक्ष्य सामाजिक आवश्यकता:** व्यक्तिवादी व्यवस्था में व्यक्तिगत लाभ को ध्यान में रखकर किए जाने वाले उत्पादन के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था में सामाजिक आवश्यकताओं और हितों को ध्यान में रखकर उत्पादन होगा क्योंकि समाजवाद इस बात पर बल देता है कि जो उत्पादन हो वह समाज के अधिकांश लोगों के लाभ के लिए हो।

(4) **उत्पादन पर समाज का नियंत्रण:** समाजवादियों का मत है कि उत्पादन और वितरण के साधनों पर राज्य का स्वामित्व स्थापित करके विषमता को समाप्त किया जा सकता है।

(5) **सभी को उन्नति का समान अवसर:** समाजवाद सभी लोगों को उन्नति का समान अवसर प्रदान करने के हिमायती है। इस व्यवस्था में कोई विशेष सुविधा सम्पन्न वर्ग नहीं होगा। सभी लोगों के

Scanned with CamScanner

समाज वर्ग को अपनी उन्नति एवं विकास के अवसर प्राप्त होंगे।

(8) **साम्राज्यवाद का विरोधी**: समाजवाद औपनिवेशिक परतंत्रता और साम्राज्यवाद का विरोधी है। यह राष्ट्रीय स्वतंत्रता का समर्थक है। लेनिन के शब्दों में, "साम्राज्यवाद पूंजीवाद का अन्तिम चरण है।" समाजवादियों का मत है कि जिस प्रकार पूंजीवाद में व्यक्ति का शोषण होता है ठीक उसी प्रकार साम्राज्यवाद में राष्ट्रों को राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से परतंत्र बनाकर शोषण किया जाता है।

समाजवाद के विपक्ष में तर्क अथवा आलोचना

(1) **राज्य के कार्य क्षेत्र में वृद्धि**: समाजवाद में आर्थिक तथा राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में राज्य का अधिकार होने से राज्य का कार्य क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो जायेगा जिससे परिणामस्वरूप राज्य द्वारा किए जाने वाले कार्य समुचित रूप से संचालित एवं सम्पादित नहीं होंगे।

(2) **वस्तुओं के उत्पादन में कमी**: समाजवाद के आलोचकों का मत है कि यदि उत्पादन के साधनों पर सम्पूर्ण समाज का नियंत्रण हो व्यक्ति की कार्य करने की प्रेरणा समाप्त हो जायेगी और कार्यक्षमता धीरे-धीरे घट जायेगी। व्यक्ति को अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने का अवसर नहीं मिलेगा और वस्तुओं के उत्पादन की मात्रा घट जायेगी।

(3) **पूर्ण समानता संभव नहीं**: प्रकृति ने सभी मनुष्यों को समान उत्पन्न नहीं किया। जन्म से कुछ बुद्धिमान तो कुछ मूर्ख, कुछ स्वस्थ तथा कुछ परिश्रमी होते हैं। अतः सबको समान समझना प्राकृतिक सिद्धान्त की अवहेलना करना है। अतः पूर्ण समानता स्थापित नहीं की जा सकती।

(4) **समाजवाद प्रजातन्त्र का विरोधी**: प्रजातन्त्र में व्यक्ति के अस्तित्व को अत्यन्त श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है वहीं समाजवाद में वह राज्य रूपी विशाल मशीन में एक निर्जीव पुर्जा बन जाता है।

(5) **नौकरशाही का महत्व**: समाजवाद में राज्य के कार्यों में वृद्धि होने के कारण नौकरशाही का महत्व बढ़ता है और सभी निर्णय सरकारी कर्मचारियों द्वारा लिये जाते हैं जिससे देश में भ्रष्टाचार बढ़ता है।

(6) **समाजवाद हिंसा को बढ़ाता है**: समाजवाद अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्रान्तिकारी तथा हिंसात्मक मार्ग को अपनाता है। यह शांतिपूर्ण तरीकों में विश्वास नहीं करता। यह वर्ग संघर्ष पर बल देता है जिसके परिणामस्वरूप समाज में वैमनस्यता और विघटन की भावना फैलती है।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष: समाजवाद एक ऐसी विचारधारा / व्यवस्था है जो समतामूलक समाज की स्थापना पर बल देती है। समाजवाद का मुख्य ध्येय समाज की आर्थिक समानता है। यह व्यवस्था पूंजीवाद का विरोध करती है तथा आर्थिक समानता का समर्थन करती है। कार्ल मार्क्स ने पूंजीवादी व्यवस्था या दुनिया विचारधारा में आर्थिक असमानता का सबसे बड़ा कारण माना है। कार्ल मार्क्स ने अपनी रचना 'दास कैपिटल' में कहा है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब पूंजीवाद का अन्त होगा तथा सम्पूर्ण विश्व पर सर्वहारा वर्ग का शासन स्थापित हो जायेगा।

समाजवादी सिद्धान्त एक आदर्श की कल्पना पर आधारित है जिसमें समाज में किसी भी व्यक्ति का शोषण न हो तथा सभी को समान अवसर मिले और सभी का सम्मान किया जाये। लेकिन समाजवाद की परिस्थिति हमेशा ही एक जैसी नहीं रही है विभिन्न परिस्थितियों एवं समय व देशकाल में भी बदलाव आता रहा है। भारत में समाजवाद के प्रणेता महात्मा गांधी एवं जय प्रकाश नारायण थे।

—— x ——

Girijesh Singh
Asst Professor
R.N. College, Pandaul
Dat: 25/04/2020

Scanned with CamScanner